प्रातःक्लास 14.3.68 ओमशान्ति पिताश्री मन्मनाभव्

ओमशान्ति। योग और ज्ञान अर्थात् होली और धूरिया। एक रंग डालते हैं दूसरा गुलाल डालते हैं। पानी ...। अभी बच्चे जानते हैं बाबा हमको ज्ञान और योग सिखलाते हैं। योग कैसा यह तो बच्चे ही जानते हैं। हम जो पवित्र थे सो अभी अपवित्र बने हैं ; क्योंकि 84 जन्मों का हिसाब तो चाहिए ना। यह है 84 का चक्र। यह जानेंगे भी वही जो 84 जन्म लेते हैं। तुम बच्चों को बाप द्वारा मालूम पड़ता है। अभी ऐसे बाप का भी (न) मानेंगे तो बाकी किसका मानेंगे? बाप की मत मिलती है। कहते हैं हम कैसे जाने? न मानते हो तो ....जाओ। कोटों में कोऊ ही मानेंगे। बाप शिक्षा भी कितनी क्लीयर देते हैं। तुम बच्चे ही मानेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। (सभी) एकरस नहीं मानेंगे। टीचर के पढ़ाई को सभी स्टूडेन्ट एकरस नहीं मानेंगे। नम्बरवार कोई 20 मार्क्स लेते, कोई कितने मार्क्स लेते। कोई नापास हो पड़ते। नापास क्यों होते हैं? क्योंकि टीचर की मत पर नहीं चलते (हैं)। वहां तो अनेक मत मिलती हैं। यहां तो (ए)क ही मत मिलती है। वह है वण्डरफुल मत। बच्चे जानते हैं बरोबर हमने 84 जन्म लिये हैं। बाप कहते हैं मैं प्रवेश करता हूँ, यह किसने कहा? शिवबाबा ने। मैं (जिस)में प्रवेश करता हूँ, जिसको भागीरथ कहते हैं, वह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। तुम भी नहीं जानते थे। (तुम)को अभी समझाते हैं तुम इतने जन्म सतोप्रधान थे फिर सतो, रजो, तमो में नीचे उतरते आये हो। तुम्हारे में जो (खुशी) थी वह उतरती आई। अभी तुम यहां पढ़ने लिए आये हो। पढ़ाई है कमाई, सोर्स ऑफ (इ)नकम। यह पढ़ाई है दी बेस्ट। अज्ञान काल में कहेंगे आई.सी.एस. दी (बे)स्ट। उनको पघार(वेतन) भी बहुत मिलता है। अभी बाप बतलाते हैं अभी जो मैं तुमको पढ़ाता हूँ दी बेस्ट है। इनसे ऊँच पढ़ाई कोई होती नहीं। तुम जो 16 कला (सम्)पूर्ण देवताएँ थे ,अभी कोई गुण न रहा है। ..... हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं, आपे ही तरस परोई। आपको ही तरस पड़ेगा। गाया भी जाता है बाबा ब्लिसफुल है, मेहरबान है। हमारे ऊपर दया करते हैं। कहते भी हैं हे ईश्वर रहम करो। बाप को बुलाते हैं। अभी वही बाप तुम्हारे सामने आया है। ऐसे बाप को जो जानते हैं उनको कितनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाबा हमको हर 5000वर्ष बाद फिर से राजधानी देते हैं सारे विश्व की। कितनी अथाह खुशी (होनी) चाहिए। तुम जानते हो हम श्रीमत पर श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनते हैं, अगर श्रीमत पर चलते रहें तो। आधा(कल्प) रावण के मत पर चले हो। वह भी कितनी अच्छी रीत समझानी देते हैं जो गधा भी समझ जाये। सीधी (बात) समझाते हैं। तुमने 84 जन्म लिये हैं। पहले तुम सतोप्रधान (थे), अभी तमोप्रधान हो ना। यह (है) रावण राज्य। .... रावण पर जीत हो तब ही रामराज्य हो। भक्तिमार्ग के शास्त्रों में तो फाल्तू बातें लिख दी हैं। कितनी ग्लानी (करते) आये हैं। बाप कहते हैं तुम अपने से भी जास्ती ग्लानी करते हो। राम की सीता चुराई, फिर ऋषि पास गये। दूब से बच्चे हुये। क्या–2 बातें लिख दी हैं। कितनी कलंक लगाई है। तो बाप कहते हैं तुम हमारी और देवताओं की कितनी ग्लानी करते हो। मेरी फिर सबसे जास्ती ग्लानी करते हो। कच्छ, मच्छ, सुअर अवतार, ... क्या–2 कह देते हो। बात मत पूछो। बाप डोरापा देते हैं। अभी भी कलियुगी मनुष्य ऐसे ही कहते हैं। बाप का नाम गायन करने बदली ग्लानी की(ही) करते रहते। बाप कहते हैं कितना अप(का)र किया है। यह भी ड्रामा (बना) हुआ है। अभी यह समझानी दी जाती है। इन सभी बातों से निकलो। एक को याद करो। वह तो मुफ्त में (तुम्हारे) गुरु भी बने, पैसे भी लूटे। गायन भी है सत का संग तारे 21 जन्म लिये। तब बोरे कौन? बच्चों से ही तो प्रश्न पूछेंगे ना। तुम जानते हो मेरा ही नाम बागवान, खिवैया है। अर्थ न समझने कारण बहुत ग्लानी करते हैं। बेहद के बाप की बेहद की ग्लानी है। फिर बेहद बाप उन्हों को ही बेहद का सुख देते हैं। अपकार कर(ने) वालों का उपकार करते हैं। वह कोई समझते नहीं हैं कि हम अपकार करते हैं। बड़ी ही खुशी से कहते हैं ईश्व(र)

सर्वव्यापी है। अभी ऐसे तो हो न सके। हरेक को अपना पार्ट मिला हुआ है। यह भी तुम जानते हो। देवी–देव(ताओं का) राज्य था। तो और कोई राज्य नहीं था। भारत सतोप्रधान (था) अभी है तमोप्रधान। बाप आते ही हैं नई सतोप्रधान दुनियाँ स्थापन करने। सो भी तुम बच्चों को मालूम है। सारी दुनियाँ को अगर मालूम पड़े तो यहाँ कैसे आवेंगे पढ़ने लिए? तो तुम बच्चों को अथाह खुशी रहनी चाहिए। खुशी जै(सी) खुराक नहीं। सतयुग में तुम बहुत ही खुशी में रहते हो। देवताओं क(ा) खान–पान आद(दि) बहुत सूक्ष्म होता है। अभी तुमको खुशी मिलती है। तुम जानते हो हम सतोप्रधान थे। अभी फिर बाबा हमको ऐसी युक्ति बताते हैं। गीता में भी पहला अक्षर है मनमनाभव्। यह गीता एपीसोड है। उसमें कृष्ण का नाम डाल सारा मुंझारा कर दिया है। वह है भक्तिमार्ग। बाप यह नॉलेज समझाते हैं। इसमें कोई खिट–पिट की बात नहीं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह तमोप्रधान दुनियाँ है ना। कलियुग में देखो मनुष्यों का क्या हाल है। अखबार में पड़ा था 42 वर्ष (का) आदमी है उनको 45 बच्चे हैं। फिर इतने युगल बनाई, इतनी ट्रबल बनाई। सारा पोतामेल लिखा था। कैसे रहते हैं। कब–2 चार बच्चे भी इकट्ठा पैदा होते हैं। खुद जीता है। बताता है मैं कैसे रहता हूँ। है भी नौक .....आदि आदमी है। तो उनको क्या कहेंगे? कुतरे। कुतरे से भी जास्ती बिच्छू–टिण्डण मिसल हो गये। सतयुग में (तो) एक धर्म, एक भाषा, एक राज्य होता है, एक बच्चा होता है। एक ही राज्य चलता है। यह ड्रामा बना हुआ...। तो एक ही सृष्टि चक्र का ज्ञान, दूसरा है योग। ज्ञान का धूरिया और होली। मुख्य बात बाप समझाते हैं। इस समय तमोप्रधान जड़–जड़ीभूत अवस्था है । विनाश सामने खड़ा है। अभी बाप कहते हैं तुमने हमको बुलाया है (कि) हमको पावन बनाओ। तुम पतित बन गये हो ना। पतित–पावन मुझे ही कहते हो। अभी मेरे साथ योग लगाओ। मामेकं याद करो। मैं तुमको सब कुछ राईट ही बताऊँगा। बाकी जन्म–जन्मांतर तुम अनराइटियस सुनते आये हो। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन पड़े हो। बच्चों से ही बात करते हैं। कल्प–2 बच्चों से ही आकर मिलते हैं। तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है ना। किसने बनाई? 5 विकार रूपी रावण ने। मनुष्य तो कितने प्रश्न पूछेंगे। माथा ही ख़राब कर देंगे। शास्त्रार्थ करते हैं ना। तो आपस में लड़ पड़ते हैं। लाठी भी लगाते हैं। यहां तो तुमको बाप पतित से पावन बनाते हैं। इसमें शास्त्र क्या करेंगे? पावन बनना है ना। कलियुग के बाद फिर सत(युग) ज़रूर आना है। सतोप्रधान भी ज़रूर बनना है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है तो शरीर भी तमोप्रधान मिलता है। सोना जि(त)ना कैरेट का होगा ज़ेवर भी उतना कैरेट (का) बनेगा। खाद पड़ती है ना। अभी तुमको 24 करैट सोना बनना है। अपन को आत्मा समझो। देहीअभिमानी बन देहअभिमान में आने से तुम छी–2 बन जाते हो। कोई खुशी न है। बीमारियां रोग आद(दि) सब हैं। अभी पतित–पावन तो मैं ही हूँ। मुझे तुमने बुलाया है। मैं कोई साधु–संत आद(दि) नहीं हूँ। तुमको कहते हैं गुरुजी का दर्शन करें? बोलो, गुरुजी तो हैं नहीं। दर्शन से कुछ फायदा नहीं होता है । तो बाप बहुत सहज समझाते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना तमोप्रधान से तमो,रजो, सतो, सतोप्रधान बनेंगे। फिर देवता बन जावेंगे। तुम यह फिर से देवता सतोप्रधान बनने लिए आये हो। बाप कहते हैं मेरे को याद करने से तुम्हारी कट निकल जावेगी। सतोप्रधान बन जावेंगे। पुरुषार्थ से ही बनेंगे ना। उठते–बैठते, चलते–फिरते बाप को याद करो। क्या स्नान करते, टट्टी करते बाप को याद नहीं कर सकते हो? अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो कट निकलती जावेगी और तुमको खुशी का पारा चढ़ेगा। कितना तुमको धन देता हूँ। तुम आये हो विश्व का मालिक बनने। वहां तुम सोने के महल बनावेंगे। इतने हीरे, जवाहर आद(दि) होंगे। तुम जानते हो भक्तिमार्ग में मन्दिर बनाते (हैं) उसमें कितने हीरे ,जवाहर आद(दि) होते हैं। एक ने थोड़े ही मन्दिर बनाया होगा। और राजाएँ भी तो बनाते होंगे। इतना सोना, हीरे ,जवाहर कहां से आते हैं। अभी तो कुछ भी नहीं है। यह ड्रामा को तुम ही जानते हो कि कैसे चक्र फिरता है। यह बैठेगा भी उन्हों की बुद्धि में जिन्होंने सबसे जास्ती भक्ति की होगी। नम्बवार ही समझेंगे।

वह पता पड़ेगा कौन बहुत सर्विस करते हैं। बहुत खुशी में रहते हैं, योग में रहते हैं। (वह) अवस्था पिछाड़ी में होगी। योग भी ज़रूरी है। सतोप्रधान बनना है। बाप आया हुआ है, उससे वर्सा लेना है। यह भी कहते हैं बाबा तो हमारे साथ है। मैं सुन रहा हूँ। तुमको सुनाते हैं तो मैं भी सुनता जाता हूँ। किसको त(ी) सुनावेंगे ना। ज्ञान अमृत का कलश तुम माताओं को ही मिलता है। माताएँ फिर सभी को बांटती हैं। सर्विस करती हैं। यह भी भक्ति है। सभी सीताएँ हैं ना, राम एक है। तुम सभी हो ब्राईडस, मैं हूँ ब्राइडग्रूम। तुमको श्रृंगार कर ससुर घर भेज देता हूँ। गाते भी हैं जो बापों का बाप, पतियों का पति है, एक तरफ महिमा करते हैं, दूसरे तरफ गाली देते हैं। मुझे ठिक्कर, भित्तर सबमें छो(झौं)क देते हैं। शिवबाबा की तो महिमा अलग है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। पोजीशन भी सभी का अलग–2 होता है। यहां तो मिलाकर सभी को एक ही कर दिया है। अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा। अभी तुम ब्रह्मा के बने हो। शिवबाबा के पौत्रे हो, पौत्रों को ही हक मिलता है। बाबा की प्रॉपर्टी है ना। प्रॉपर्टी मिलती है हद की और बेहद की। तीसरा कोई होता ही नहीं, जिससे वर्सा मिले। लौकिक और पारलौकिक से वर्सा मिलता है। यह है अलौकिक, इनको कुछ भी वर्सा नहीं है। यह कहते हैं हम भी उनसे ही वर्सा लेते हैं। परलौकिक परमपिता को ही सभी याद करते हैं। सतयुग में याद ही नहीं करेंगे। वहां तो सुख है ना। बाबा बहुत क्लीयर समझाते हैं। सतयुग में एक बाप। रावण राज्य में हैं दो बाप। संगम पर हैं तीन बाप– लौकिक–पारलौकिक और तीसरा है वण्डरफुल बाप; परन्तु इनसे तो वर्सा मिलता ही नहीं है। (वर्सा) इन द्वारा बाप देते हैं। इनको भी यहां से वर्सा मिलता है। ब्रह्मा को एडम गाते हैं। ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर। शिवबाबा को तो फादर ही कहेंगे। सिजरा मनुष्यों का ब्रह्मा से ही शुरू होता है ; इसलिए उनको ग्रेट–2 ग्रैण्डफादर कहा जाता है। नॉलेज तो बहुत सहज दी है। तुमने 84 जन्म लिए हैं। समझाने लिए चित्र भी हैं। इसमें कोई उल्टा–सुल्टा प्रश्न करने की दरकार ही नहीं। पहले–2 दो बाप की बात ऋषियों–मुनियों से पूछते थे तो नेती–2 कहते थे अर्थात् नहीं जानते। बाप ही आकर अपना परिचय देंगे ना। अभी तुम बेहद के बाप को जानते हो। तो कितना प्यार से उनको याद करना चाहिए। अभी धीरे–2 तुम ऊपर चढ़ते जाते हो। ड्रामा अनुसार कल्प–2 नम्बरवार कोई सतोप्रधान, सतो,रजो, कोई तमो तमोप्रधान बनते हैं। ऐसा ही फिर पद भी वहां मिलता है ; इसलिए बाप कहते हैं बच्चे , अच्छी रीत पुरुषार्थ करो। सज़ा न खाओ। पुरुषार्थ ज़रूर कराते हैं। भल समझते हैं बनेंगे वही जो कल्प पहले बने होंगे; परन्तु पुरुषार्थ ज़रूर करावेंगे। जो नज़दीक वाले होते हैं पूजा भी अच्छी रीत वह करते हैं। पहले–2 तो मेरी ही पूजा करते हैं। भक्तिमार्ग में भी पहले मेरी पूजा फिर देवताओं की पूजा करते हैं। अभी तुमको देवता बनना है। तुम अपना राज्य योगबल से स्थापन करते हो। योगबल से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। बाहुबल से कोई विश्व की बादशाही ले न सके। वह लोग भाईयों–2 को भी आपस में लड़ाते रहते हैं। इतना जो बारूद बनाते हैं वह लड़ाई के लिए ही है ना। उधार में भी सब देते रहते हैं। बारूद है ही विनाश के लिए ; परन्तु यह भी किसकी बुद्धि में नहीं आता ; क्योंकि वह तो सम(झ)ते हैं कल्प की आयु लाखों वर्ष है। घोर–अंधियारे में है ना। विनाश हो जावेगा और यह घोर अंधियारे कुम्भकरण की नींद में सोये रहेंगे। जागेंगे नहीं। तुम अभी जागे हो ना । बाप तो है जागत(ी) ज्योत। नॉलेजफुल। तुम बच्चों को भी आप समान बनाते हैं। वह है भक्ति, यह है ज्ञान। ज्ञान से तुम कितना सुखी बनते हो। अन्दर में रहना चाहिए हम सतोप्रधान थे फिर 84 जन्म लेते तमोप्रधान बने हैं। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। बाप को याद करना है। इसको ही कहा जाता है बेहद का सन्यास। यह पुरानी दुनियाँ तो विनाश होनी ही है। नैचुरल कैलेमिटीज़ सबसे बड़ा कारीगर है। उस समय तो तुमको खाना भी पूरा नहीं मिलेगा। तुम अपने खुशी के खुराक में रहेंगे। जानते हो यह सब खलास होना है। इसमें मूंझने की तो बात ही नहीं। बेहद का बाप कहते हैं मैं तुमको फिर से सतोप्रधान बनाने आया हूँ। हमको बुलाया ही है कि आकर

सतोप्रधान , पावन बनाओ। मेरा काम है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना। सो युक्ति बताते रहते हैं। बाकी 84 (जन्म) का ज्ञान तो बहुत सहज है। इसमें कोई प्रश्न उठ नहीं सकता। तुम चुप करके सिर्फ सुनते जाओ। कमाल करो। ऐसा कौन होगा जो कहेगा हम सतोप्रधान हैं? क्या यह सतयुग है ? मनुष्य तो कह देते स्वर्ग–नर्क ही है। अभी उनसे क्या बैठ माथा मारेंगे? वह तो उल्टी–सुल्टी ही प्रश्न करेंगे। बाप से प्रश्न थोड़े ही किया जाता है। वह तो आपे ही मुरली में सब समझाते रहते हैं। बच्चे समझते हैं आज तो मुरली में हमारी दिल की बातें आ गईं। सारा मदार मुरली पर ही है। बाप कितना समझाते हैं। माया फिर भी भुलाय देती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है, जो बाप के सिवाय और कोई बता न सके। तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो ; परन्तु ब्राह्मणों की माला होती नहीं। रुण्डमाला माला ही फिर विष्णु की माला बनती है। अभी यह है रूहानी होली और धुरिया। योग और ज्ञान। यह पढ़ाई तो बहुत ही सहज है; परन्तु माया भुला देती है। धन आद(दि) के नशे में आ जाते हैं। बाप कहते हैं सभी से ममत्व मिटा दो। मुझे याद करो। तुम गाते भी आये हो आप आवेंगे तो हम सिर्फ एक आप को ही याद करेंगे। अभी बाप आये हैं तो फिर याद क्यों नहीं करते हो? भल (घर)–गृहस्थ में रहो, सिर्फ मामेकं याद करो। मैं परमधाम से आया हूँ तुमको पढ़ाने। मैं कल्प–2 इस तन में ही आता हूँ। कहेंगे एक में ही क्यों? अरे! यह तो ड्रामा अविनाशी बना हुआ है। इसमें (फ़र्क) थोड़े ही पड़ सकता है। अज्ञानी लोग थोड़े ही जानते हो(हैं) तुम लोग कौन हो। तो तुम कहेंगे हम प्रजापिता (ब्रह्मा) के डायरैक्ट बच्चे हैं ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। वह ब्राह्मण थोड़े ही कहते हैं हम ब्रह्माकुमार हैं। उनसे पूछो तुम अपने को ब्रह्मा की औलाद कहते हो; परन्तु ब्रह्मा कहा है? तुम मनुष्यों की औलाद हो। तुम प्रजापिता ब्रह्मा की मुखवंशावली तो हो नहीं। तुम तो कुखवंशावली हो। जानते हैं ब्राह्मण इतने ही बनेंगे जितने देवता बने होंगे। वह ब्राह्मण ऐसे ही समझते हैं। तुम पूछ सकते हो अगर ब्रह्मा के औलाद हो तो ब्रह्(मा) (कहां) है? वह कब आया? बोलो, गीता पढ़े हो? अपने धर्म को ही नहीं जानते हो। बाप ने कहा है मैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराता हूँ। तीन मूर्ति है ना। त्रिमूर्ति माना ही ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। यह किसके औलाद है? इनका रचयिता कौन है? बता नहीं सकेंगे ; क्योंकि सर्वव्यापी का ज्ञान बुद्धि (में) बैठा हुआ है। बाप कहते हैं तुम मुझे याद करते–2 पावन बन मेरे पास आ जावेंगे। जैसे मक्खियों का झुण्ड होता है ना। रानी के पिछाड़ी सब भागते हैं। (तुम) भी मच्छरों सदृश्य वापस जावेंगे। सतयुग में हैं ही थोड़े मनुष्य। कलियुग में ढेर मनुष्य। 5000 वर्ष की बात मनुष्य भूल गये हैं। तो फिर लाखों वर्ष की बात याद कैसे रह सकती? अपन को आत्मा समझो। आत्मा ही तमोप्रधान बनी है अभी फिर सतोप्रधान बनना है। बाप को याद करो तो अंत मते सो गते हो जावेगी। वह भी जानते हो सतयुग में हम थोड़े रहते हैं। बाकी सभी ऊपर में रहते हैं; इसलिए निराकारी झाड़ भी दिखाया है। निराकारी और फिर साकारी। बाप सा. आदि भी कराते हैं। तुम देखते हो सूक्ष्म फरिश्ते भी हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मा के पास जाते हैं। बाबा भी इसमें आकर तुमको बहलाते हैं। मूल बात है बाप यहां आकर पावन बनाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो कुछ भी काम नहीं करते हैं। पावन बनने से ही सूक्ष्मवतन में फश्ते बनेंगे। पावन बनने लिए मेहनत करनी है ; इसलिए प्राचीन भारत का योग कहते हैं। बाप ने ही सिखाया था । कृष्ण का नाम डालने से मूंझ पड़े हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। वह है हठयोगी। तुम हो राजयोगी। हठयोग के (नमूने) तो जयपुर में जाकर देखो। वह है हद का सन्यास। यह है बेहद का सन्यास। बाप समझाते रहते हैं यह पुरानी (दुनियाँ) खतम होनी है। शादी कर बच्चे आदि पैदा करेंगे ; परन्तु उनको तो मिलता ही कुछ नहीं है। इतना समय ही नहीं है। फिर लौकिक–पारलौकिक दोनों वर्ष गवां देते हैं। यह भोग आदि लगाना, यह सब है चिट–चैट। इन(में) न ज्ञान है , न विज्ञान है। ड्रामा में यह सब नूँध है तब ही होता है। अच्छा, बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार , गुडमॉर्निंग और नमस्ते। नमस्ते। ओमशान्ति।